Int. J.App.Uni.Res. Special Issue, June 2015

Journal
OF APPLIED AND UNIVERSAL RESEARCH

ISSN: 2395-0269 (Online)
Website-www.ijaur.com
Copyright@2014
IJAUR All Right Reserved

Proceedings of National Seminar

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
University Grants Commission

Climate Change & Human Health

22-23 February 2015

Sponsored By

UGC, CRO Bhopal (M.P.)

Organized By
Department of Zoology
Govt. Maharaja College, Chhatarpur (M.P.)

Chief Reviewer of This Issue-
Dr. H.N. Khare, Prof. & Head,
Dept. of Zoology,

Scanned by CamScanner

संस्कृत साहित्य में जलवायु चिंतन

डॉ. रामहेत गौतम, सहायक प्राध्यापक संस्कृत,
डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म.प्र.

शन्नो वातः पवतां शन्नस्तपतु सूर्यः।
शन्न कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभिवर्षतु।।[1]

वायु हमारे कल्याण के लिए ही वहे। सूर्य हमारे हित के लिए ही पप्त हो। मेघ भी हमारे कल्याण के लिए ही वृष्टि करें। यहाँ वैदिक ऋषि अच्छी जलवायु की कामना कर रहा है। वह जानता है कि वायु, सूर्य और जल ही हमारी जलवायु के प्रमुख घटक हैं। किसी स्थान विशेष पर निश्चित अबधि के लिए अनुभूत होने वाली औसत जलवायु ही वहाँ का मौसम कहलाती है। जो वर्षा, सूर्य, प्रकाश, हवा, नमी, व तापमान से तय होता है। मौसम जल्दी जल्दी बदलता है जबकि जलवायु परिवर्तन में काफी समय लगता है। जिससे जलवायु परिवर्तन आसानी से नहीं दिखता। वर्तमान में पृथिवी के तापमान में परिवर्तन हो रहा है। सभी प्रणी उसके साथ सामंजस्य भी बना रहे हैं। गर्मी के मौसम में गर्मी और सर्दी के मौसम में ठण्ड लगती है। यह सबकुछ मौसम में बदलाव के कारण होता है। शीतलता व अमृत का स्रोत चन्द्रमा भी शीत ऋतु में लोगों को नहीं भाता। शरद ऋतु में गुनगुनी किरणों से सुख देने वाला सूर्य भी गर्मी में कष्टकर ही लगता है।

शशिनीव हिमार्तानां घर्मार्तानां रवाविव।
मनो न रमते स्त्रीणां जराजीर्णेन्द्रिये पतौ।।[2]

प्रत्येक ऋतु का अपना विशेष आनन्द है। जैसे कि रामायण के अयोध्या काण्ड में पिता की मृत्यु पर विलाप करते हुए भरत को समझाते समय राम कहते हैं कि–

हृष्यन्त्यृतुमुखं दृष्ट्वा नवं नवमिहागतम्।
ऋतूनां परिवर्त्तेन प्राणिनां प्राणसंक्षयः।।[3]

अर्थात् ऋतु के आरम्भ को देखकर लोग हर्षित होते हैं। परन्तु वह नहीं जानते कि इन ऋतुओं के परिवर्तन से प्राणियों के प्राणों का कमशः क्षय होता है।

जलवायु की अनुकूलता के लिए वैदिक ऋषि कामना करते हैं कि–

वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः।।[4]

अर्थात् हे प्रभो हमारे लिए वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर ये छहों ऋतुएँ आनन्दप्रद हों। क्योंकि हमारे ऋषि जानते थे ऋतुओं की अनुकूलता ही जगत हित में है। ऋतुओं के अनुकूल जीवनशैली अपनाकर जीवन को अधिक सुखकर बनाया जा सकता है।

जैसे कि दयानन्द दिग्विजयकार कहते हैं कि –

षण्णामृतुनां रमणीयरूपैरुपस्थिता भारतरङ्गमञ्चे।
स्फुरद्विलासा प्रकृतिर्नटीयम् यस्या मनो नन्दयति प्रकामम्।।[5]

अर्थात् प्रकृति भारत के रंगमंच पर कमशः छः ऋतुओं के सुन्दर रूपों के साथ जब पहुँचती है, तो अपने हाव–भावों को दिखाती हुई सबकें हृदयों को प्रसन्न कर देती है।

भारत में वसन्त आदि छः ऋतुएँ कमशः आकर विविध अन्न–फल–फूल तथा वायुमण्डल प्रदान करती हुई सबको आनन्द प्रदान करती है।

प्रत्येक ऋतु का अपना अलग ही आनन्द है।वर्षा ऋतु की रम्यता का वर्णन करते हुए ऋग्वेद के ऋषि कहते हैं–

प्रवाता वान्ति परयन्ति विद्युत उदोषधीजिर्हते पिन्वते स्वः।
इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत्पर्जन्यः पृथिवीं रेतसाबति।।[6]

अर्थात् जब प्राणियों को पुष्ट करने वाला मेघ जल द्वारा पृथिवी को पुष्ट करता है। तो उस समय तेज हवायें चलती हैं। विजलियाँ सबको कत्पित करती हैं। औषधियाँ बढ़ने लगती हैं और सुख प्राप्त होता है। तभी सम्पूर्ण प्रणियों के लिए अन्नादि खाद्य पदार्थ उत्पन्न होते हैं। मेघ वृष्टि द्वारा भूमि को तृप्त कर प्राणियों के लिए खाद्य पदार्थ उत्पन्न करता है।

भोगवादी मानव के हस्तक्षेप ने ऋतुओं की रम्यता को प्रभावित किया है। पिछले दो दशकों में जलवायु परिवर्तन इतनी तेजी से हुआ हैं कि प्राणी व वनस्पति जगत को इस बदलाव के साथ सामंजस्य विठाने में कठिनाई आ रही है। इस परिवर्तन के लिए मानव के कियाकलाप ही जिम्मेदार हैं। जलवायु परिवर्तन के कारणों को दो भागों में वांटा जा सकता है– प्राकृतिक एवं मानव निर्मित

प्राकृतिक कारण– महाद्वीपों का खिसकना, ज्वालामुखी, समुद्री तरंगें, और धरती का घुमाव।

- महाद्वीपों का खिसकना–पृथिवी उत्पत्ती के साथ बने महाद्वीप भूगर्भीय हलचलों, वायु के प्रवाह के कारण निरन्तर चलायमान रहते हैं जिससे समुद्र में तरंगें व वायु प्रवाह उत्पन्न होता है। परिणामस्वरूप जलवायु में परिवर्तन होता है।
- ज्वालामुखी– ज्वालामुखी फटने पर सल्फरडाईआक्साईड,पानी, धूलकण और राख के कणों का वातावरण में उत्सर्जन होता है। जो जलवायु को लम्बे के लिए प्रभावित करते हैं। गैस व धूल कणों से सूर्यकिरणों का मार्ग अबरुद्ध हो जाने से वातावरण का जापकम का सन्तुलन गड़वड़ा जाता है।
- पृथिवी का झुकाव– पृथिवी 23.5 डिग्री के कोण पर झुकी हुई है। पृथिवी के त्रियक घूमने से ऋतुए परिवर्तित होती हैं।
- समुद्री तरंगें – 71 प्रतिशत भूभाग को आवृत करने वाला समुद्र स्थल की अपेक्षा दोगुनी तेजी से सूर्यकिरणों का अवशोषण

Scanned by CamScanner

करता है। तरंगों के माध्यम से काफी अधिक मात्रा में ऊष्मा का प्रसार होता है।

मानवीय कारण–

S ग्रीन हाउस प्रभाव– हमारी पृथिवी सूर्य से ऊष्मा प्राप्त करती है। सूर्य की किरणें वायुमण्डल से गुजरती हुई भूतल से टकराकर परावर्तित होती हैं। धरती का वायुमण्डल कई गैसों से मिलकर बना है। जिनमें कुछ ग्रीनहाउस गैसे भी सामिल हैं। जो पृथिवी सतह के ऊपर एक प्राकृतिक आवरण बना हलेती हैं। जो लौटती हुई किरणों के एक हिस्से को रोक लेता है जिससे थरती का वातावरण गर्म वना रहता है। जो कि पुथिवी पर जीवन के लिए कमसे कम 16 डिग्री होना आवश्यक है। जलवायु वैज्ञानिकों का मानना है कि ग्रीनहाउसगैसों में बढोत्तरी से यह आवरण और भी सघन हो जाने से सूर्यकिरणों को अधिक मात्रा में रोकने लगता है जिससे भूमण्डलीय तापन के दुप्रभाव उत्पन्न होने लगता है। सारे संसार के तापकम में वृद्धि से समुद्र का जलस्तर में वृद्धि, मौसम की तीव्रता में वृद्धि,अवक्षेपण की मात्रा और संरचना में बदलाव आ जाता है। कृषि उपज प्रभावित होती है। व्यापार मार्ग अस्तव्यस्त हो जाते हैं। ग्लेशियर खिसकने लगते हैं। जीव प्रजातियों का विलोपन होने लगता है। वीमारियों में बृद्धि होने लगती है। अतः आज वृक्षारोपण के साथ–साथ कूप, तालाब, नदियों वनों और उद्यानों के सृजन, संरक्षण आवश्यक हो गया है।

'ततः शिवं कुसुमित बालपादपं'[7]
'छायाफलादयर्थं वृक्षमाश्रयते जनः'[8]
उद्यानदेवायतनाश्रमाणां कूपप्रपापुष्करिणीवनानाम्।
चक्रुः क्रियास्तत्र च धर्मकामाः प्रत्यक्षतः स्वर्गमिवोपलभ्य।।[9]

1 यजुर्वेद 36.10
2 हितोपदेश मित्रलाभ 110
3 वाल्मीकीय रामायण अयोध्या काण्ड 105/25
4 सामवेद 6/3/4/2
5 दयानन्द–दिग्विजयम्
06 ऋग्वेद 15/83/4
07 बुद्धचरित 3/64
08 बुद्धचरित 18/75
09 बुद्धचरित 2/12

Scanned by CamScanner